International Journal of Applied Research 2019; 5(3): 77-80

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2019; 5(3): 77-80
www.allresearchjournal.com
Received: 02-01-2019
Accepted: 09-02-2019

**डॉ. देवी प्रसाद**
सह आचार्य–हिन्दी, सेठ नन्दकिशोर पटवारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. देवी प्रसाद**
सह आचार्य–हिन्दी, सेठ नन्दकिशोर पटवारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

# समसामयिक हिन्दी ग़ज़ल में स्त्री विमर्श

## डॉ. देवी प्रसाद

**सारांश**
स्त्री–विमर्श ने हिन्दी ग़ज़ल में खूब जगह बनाई है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने नारी को संघर्षशील बनाने का संदेश दिया है। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में सामाजिक खोखलेपन और पुरुष की स्वार्थपरता के विरुद्ध आवाज उठाई है। ग़ज़लकारों ने नारी–मन की प्रत्येक दशा का चित्रण किया गया है। समसामयिक हिन्दी ग़ज़ल में नारी की संवेदनाओं, दर्द, पीड़ाओं को सशक्त अभिव्यक्ति दी गई है।

**कूटशब्दः** मातृसत्तात्मकता, पितृसत्तात्मकता, ऑनर किलिंग, भौतिकतावाद, नैतिकता, गाफिल, लाज, खोखलापन, भ्रूण–हत्या, संवेदना, पीड़ा, शोषण, व्यभिचार, बेमेल विवाह

**प्रस्तावना**
सम्मानपूर्वक जीवन जीना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। महिलाओं को उचित मान–सम्मान मिलना चाहिए, यह बात अक्सर सुनने को मिलता है। वैसे महिलाएँ ही नहीं अपितु हर व्यक्ति सम्मान का हकदार है, चाहे वह महिला हो या पुरुष, बालक हो या वृद्ध, धनी हो या निर्धन। विभिन्न धर्म ग्रंथों में नारी को देवी का रूप बताकर महिमामंडन किया गया है। नारी के लिए 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' भी कहा गया है। वैदिक काल में कुछ महिलाओं का विवरण मिलता है, जो विदुषियां थी। वैदिक काल के पश्चात् उत्तर वैदिक काल से परिवार मातृसत्तात्मक से पितृसत्तात्मक हो गये। कालान्तर में पुरुषों ने महिलाओं पर धर्म और संस्कार की आड़ में कई तरह के सामाजिक प्रतिबन्ध लगा दिए। माना जाता है कि यहीं से नारी की दशा एवं स्थिति का पतन प्रारंभ हो गया।
प्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद ने भी ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास जगत, नग, पग, तल में, पियुष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।'' कहकर नारी को सम्मान और श्रद्धा की प्रतिमूर्ति बतलाया है, परन्तु विचाणीय है कि क्या वास्तव में नारी कि स्थिति वैसी ही है या कुछ और। आधुनिक युग की बात करें, तो पाते है कि वर्तमान में नारी की दशा सोचनीय है। वैसे नारी की परिवार एवं समाज में अहम् भूमिका होती है। उसे परिवार की धुरी माना जाता है, परन्तु आए दिन अखबारों की सुर्खियाँ सभ्य समझे जाने वाले समाज का मुखौटा उतारने के लिए काफी हैं। अखबार भ्रूण हत्या, दुराचार, ऑनर किलिंग आदि की खबरों से भरे रहते हैं।
साहित्य की विभिन्न विधाओं में स्त्री विमर्श को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है। नारी को एक ओर प्रेरणादायक शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है, तो दूसरी ओर उसके सौन्दर्यपरक रूप का चित्रण देखने को मिलता है। साहित्य की अन्य विधाओं के साथ ही हिन्दी ग़ज़लकारों ने नारी के प्रेम एवं सौन्दर्य के चित्रण के बजाय उसके दुःख–दर्द, पीड़ा, घुटन, नारकीय जीवन को अधिक अभिव्यक्त किया। उसके औरत होने के कारण उस पर होने वाले अन्याय–अत्याचार की त्रासदी को इन हिन्दी ग़ज़लों में व्यक्त किया गया है।
महिलाओं को जन्म के बाद तो आए दिन अनेक परेशानियों से दो–चार होना पड़ता ही है, लेकिन उन पर तो जन्म लेने से पूर्व ही अत्याचार शुरु हो जाता है। बेटी के पैदा होने पर सम्मान नहीं होना एवं शादी का खर्च नहीं उठा पाना जैसे मानसिकता वाले उसको कोख में ही मार देते हैं या उसे किसी कूड़ेदान में फेंक देते हैं। मुनव्वर राना का यह शेर ऐसी स्थितियों को चित्रित करने के लिए कितना सटीक एवं सार्थक हैः–

''फिर किसी ने लक्ष्मी देवी को ठोकर मार दी
आज कूड़ेदान में फिर एक बच्ची मिल गई।''[1]

मानव स्वभाव से स्वार्थी है। वह अपने स्वार्थ एवं फायदे के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। बदलते दौर में सबकुछ बदला है। भौतिकतावाद ने मानवीय संबंधों को बहुत प्रभावित

किया है। आजकल नैतिकता नाम की कोई बात नहीं है। मनुष्य अति महत्त्वाकांक्षी हो गया है। हिन्दी ग़ज़ल में पुरुष के चारित्रिक पतन को उजागर किया गया है। वह अपने प्रमोशन के लिए कुछ भी करने को तैयार दिखाई देता है। ग़ज़लकार जहीर कुरैशी ने अपनी ग़ज़ल में ऐसी स्त्री की विवशता का चित्रण किया है, जिसे अपनी मजबूरी के चलते पति के प्रमोशन के लिए उसके बॉस के साथ रात बितानी पड़ती हैः–

''महत्वाकांक्षी पति के इशारे पर
गई थी कल भी वो साहब के बिस्तर तक।''[2]

तेजपाल सिंह 'तेज' के अनुसार भी कुछ महिलाएँ बाहर ही नहीं, कई स्थितियों में वे अपने ही घर में सुरक्षित नहीं होतीः–

''नैतिकता और मानवता के सीने पर,
विध्वंसों ने पाली–पोसी एक सदी।
रक्षक और भक्षक के जैसे भेद मिटे,
अपनी चौखट पर धनिया की लाज लुटी।''

कमजोरों और महिलाओं का हमेशा शोषण से होता रहा है। कहीं वर्ण को लेकर, तो कहीं वर्ग, धर्म और जाति को लेकर। दलित और नारी को संसार में जन्म लेने के बाद तरह–तरह के अत्याचार, भेदभाव एवं शोषण को भागना पड़ता है। भारतीय समाज में आज भी नारी की स्थिति दोयम दर्जे की बनी हुई है। लड़की को पराया धन मानकर जन्म से ही उसकी उपेक्षा की जाती है। लड़कों की तुलना में उससे दोयम दर्जे का व्यवहार होता है। उसे बचपन से ही सिखाया जाता है कि भविष्य में तुम्हें घर संभालना है। गृहकार्य तुम्हारा संस्कार है एवं शर्म, लज्जा उसके गहने हैं। सदियों से पुरुष ने स्त्री का मान–मर्दन किया है। खेद का विषय है, कि आज 21 वीं सदी में भी वह इस मानसिकता से बाहर निकल नहीं पा रहा है। ग़ज़लकार अदम गोंडवीं ने इसी मानसिकता को उजागर किया हैः–

''औरत तुम्हारे पाँव की जूती की तरह है
जब बोरियत महसूस हो घर से निकाल दो।''[3]

जैसे ही बेटी का जन्म होता है। पिता को अपनी पुत्री के विवाह में होने वाले खर्च को लेकर चिंता सताने लगती है। बेटी को विदाई के समय पिता की ओर से उसके जीवन निर्वाह के लिए कुछ सामान आदि दिया जाता है। हो सकता है, इसके पीछे कभी कोई अच्छी भावना रही होगी परन्तु आज यह परम्परा दहेज का विकृत रूप ले चुकी है। पिता युवा पुत्री के विवाह एवं दहेज की चिन्ता में डूबा जाता है। ऐसे पिता के दर्द को ग़ज़लकार निरजंना जैन ने इस प्रकार व्यक्त किया हैः–

''बेटी हुई सयानी, ब्याहूँगा कैसे उसको
मुफलिस का जिस्म, उसकी चिन्ता में गल रहा है।''[4]

यद्यपि मानव–सभ्यता ने बहुत उन्नति की है, परन्तु सामाजिक सुरक्षा की भावना अभी भी नहीं आ पाई है। घर में रहते हुए भी आदमी भयभीत होता है। अगर महिलाओं की बात की जाए, तो उसे अनेक बार अपने घर में भी विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बेटी जैसे–जैसे युवा होती है, पिता को उसकी सुरक्षा और विवाह की चिंता सताने लगती है। समसामयिक हिन्दी ग़ज़ल में जवां बेटी के पिता के दर्द को भी स्वर दिया गया है। बेटी के जन्म लेते ही उसका पिता शादी के लिए पैसा जोड़ना प्रारंभ कर देता है। उसकी बेटियाँ घर पर अकेली हैं, इस चिन्ता में वह बाहर भी नहीं जा पाता। बलात्कार एवं शोषण की खबरों ने उसके पाँव में जंजीर डाल दी हैः–

''नहीं है शौक मुझको रतजगे का,
मेरे घर पर सयानी बेटियाँ हैं।''[5]

बेटियाँ आज भी बिना भय के सब कहीं आ–जा नहीं सकती। गली,–मुहल्ले में, सड़क पर, पार्क में, सार्वजनिक जगहों पर, कार्यालयों में उन्हें लोगों की बदनीयती का सामना करना पड़ता है। कुछ आवारा किस्म के लोग शिकारियों की तरह घूमते रहते हैं। जवान बेटी के पिता को अपनी बेटी को बचाने के लिए बचते–बचाते चलना पड़ता है। ग़ज़लकार जफर मिर्जापुरी ने ऐसे मजबूर बाप की पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया हैः–

''ये कैसा शहर है बेटी की आबरू के लिए
गरीब बाप की टोपी सलाम करती है।''[6]

दहेज प्रथा समाज के लिए कलंक है। इस प्रथा ने मध्यम वर्गीय परिवार की कमर तोड़ दी है। ग़ज़लकार डॉ. गोपाल बाबु शर्मा के अनुसार, दहेज नहीं देने के कारण फूल जैसी बच्चियों को जीवन में कांटे ही मिलते हैं। दहेज के अभाव में लड़कियों की उम्र अधिक हो जाती है। मनचाहा जीवन–साथी नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में इन बेटियों को मन की इच्छाओं को मारकर जीवन–साथी को मजबूरन अपनाना पड़ता हैः–

''बेटियों की भावनाएं मर गई।
तब कहीं जाकर उन्हें ये वर मिले।''[7]

प्रसिद्ध ग़ज़लकार मंजर भोपाली ने भी अपनी ग़ज़ल में एक ऐसे पिता की मजबूरी का चित्रण किया है, जो दहेज का बन्दोबस्त नहीं कर पाता है, जिससे उसकी बेटी की समय पर शादी नहीं हो पाती हैः–

''बाप बोझ ढ़ोता था कैसे दहेज दे पाता,
इसलिए वो शहजादी आज तक कंवारी है।''

ऐसा नहीं है कि बेटी को लिखा–पढ़ा देने के बावजूद दहेज न देना पड़े। 'बेटी ही दहेज है' का उपदेश देने वाले लोग भी दहेज लेते देखे जाते हैं। समाज की विडम्बनापूर्ण स्थिति यह है कि बेटी को डॉक्टर, इंजीनियर बनाने के बाद भी दहेज देना पड़ता है। दहेज के लोभियों ने इसके लालच में कई बहुओं को जिन्दा जला दिया। यह भी आश्चर्य है कि दहेज की खातिर बहुओं को जलाने की घटनाएँ अधिकतर सम्पन्न घरों में दिखाई देती हैं। इसी संदर्भ में ग़ज़लकार रामदरश मिश्र की ग़ज़ल द्रष्टव्य हैः–

''उत्सवों में गूँजकर रोती है फिर लपटों के साथ
बेटियाँ जलती रही, शहनाइयाँ बजती रही।''[8]

नारी की समस्याएँ कभी भी खत्म न होने वाला सिलसिला बन गई हैं। उसे आजीवन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भारतीय नारी विवाह के पश्चात् भी शोषण से मुक्त नहीं हो पाती, अपितु कई बार तो वह शोषण का शिकार होते–होते जिन्दगी की जंग हार जाती है या उसकी हत्या कर दी जाती है। कई स्त्रियों को उनके ससुराल वाले प्रताड़ित एवं अपमानित करते हैं। ग़ज़लकार बल्ली सिंह 'चीमा' पराधीन एवं दर्द से पीड़ित भारतीय स्त्री को जगाने का प्रयास करते हैं। रूढ़िवादी समाज में पति से प्रताड़ित होने के बावजूद पति को परमेश्वर मानने वाले स्त्री से वे कहते हैं–

''गुम सुम, गुम सुम मुरझायी सी
क्यों रहती हो तुम
मर्द की गाली, जूते बोलो

क्यों सहती हो तुम
मर्द तुम्हारा घोर शराबी
और जुआरी है।
उसको अपना परमेश्वर
फिर क्यों कहती हो तुम।''[9]

हम स्वीकार करें या न करें परन्तु यह सत्य है कि समाज में लड़कियों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता है, जो नहीं होना चाहिए। महिलाओं के खिलाफ दहेज समेत अन्य अमानवीय प्रथाओं को समाप्त करना आवश्यक है। दहेज के लोभी दहेज नहीं मिलने के कारण कई बार बारात वापस ले जाते हैं। समाज को जागरूक करना आवश्यक है, तभी इन सामाजिक बुराईयों का अंत होगाः–

''दहेज के लिए जब लौट कर बारात जाती है
तो सारे शहर में इक बाप की औकात जाती है।''[10]

दलित नारी दोहरे शोषण का शिकार है। एक नारी होने के कारण उसका शोषण होता है और दूसरे दलित होने के कारण उसे अत्याचार सहना पड़ता है। ग़ज़लकार माणिक वर्मा ने सामान्य स्त्री के साथ ही दलित स्त्री पर होने वाले अत्याचार एवं शोषण को अभिव्यक्ति दी है। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में कमजोर, दबे कुचले, दलित वर्ग की स्त्री के बलात्कार, शोषण को उजागर किया हैः–

''दलित नारी है तो नंगा घुमाओ
सती है तो उसे जिन्दा जला दो
मदद को जिंदगी जब भी पुकारे
बजाकर शंख चीख़ों को दबा दो।''[11]

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल से जीवन का कोई भी पहलू अधूता नहीं है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने नृत्यागंनाओं एवं वेश्याओं के दुख, पीड़ा संताप को भी व्यक्त किया है। भूख, गरीबी, बेरोजगारी, अर्थाभाव, मजबूरी के कारण आज अनेक महिलाएँ नृत्यागंना या वेश्या बनने को मजबूर हैं। विषम परिस्थितियों ने उसे इस घृणित काम में धकेल दिया है। ग़ज़लकार जहीर कुरैशी ने ऐसी स्त्रियों के जीवन–संघर्ष के बारे में लिखा हैः–

''धीरे–धीरे वो कुशल नृत्यागंना बन गई।
वक्त ने उस औरत को नचाया है बहुत।''[12]

ग़ज़लकार अदम गोंडवी ने हिन्दी ग़ज़ल को नई दिशा प्रदान की है। इनकी ग़ज़लें समाज की सच्चाइयों से परिचय करवाती हैं। इन्होंने दलित और स्त्री के शोषण पर अपनी लेखनी चलाई है। गोंडवी ने मजबूर स्त्री की तुलना अहिल्या से करते हुए उसकी पीड़ा को व्यक्त किया हैः–

''जब हुई नीलाम कोठे पर किसी की आबरू
फिर अहिल्या का सरापा जिस्म पत्थर हो गया।''[13]

शोषण तब तक खत्म नहीं हो सकता, जब तक कि व्यक्ति अपने ऊपर होने वाले जुल्म के खिलाफ आवाज न उठाए। ग़ज़लकार बल्ली सिंह चीमा ने पद दलित, कमजोर और पीड़ित नारी को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का आहवान किया है। वर्तमान युग में नारी का हरण करने वाले रावण से उसे स्वयं ही लड़ना होगाः–

''न जाने कब कहाँ कोई बन जाये दामिनी
सीता लड़ेगी रावणों से राम के बगैर।''[14]

इन्होंने अपनी ग़ज़लों में मनुष्य का रूप धारण किये भेड़ियों का उल्लेख किया है, जिनसे हर स्त्री को सावधान रहने की जरूरत है। इनसे सावधान रहकर ही वह अपना परिवार निस्संकोच होकर चला सकती हैः–

''भूखी नजरों से घूरने वालो
मैं भी दिल, आँख कान रखती हूँ।
हर तरफ भेड़ियों की आवाजें
खुद को सावधान रखती हूँ।
माँ, बहन, बेटी और बहू बनकर
कैसे जीना है ध्यान रखती हूँ।''[15]

नारी उत्पीड़न पर बहुत से ग़ज़लकारों ने अपनी लेखनी चलाई है। आधुनिक पीढ़ी के युवा ग़ज़लकार डॉ. उर्मिलेश भी इसमें पीछे नहीं है। उन्होंने स्त्री के सम्पूर्ण जीवन को कुछ शब्दों में पिरोया है। औरत के दर्द, पीड़ा, घुटन, संत्रास भरे जीवन को व्यक्त करती हुई उनकी ग़ज़ल द्रष्टव्य हैः–

''मजबूरियों का जाल है औरत की जिन्दगी।
कितना बड़ा सवाल है औरत की जिन्दगी।।
ये जुल्म, बलात्कार तो चांटे की तरह है।
सहलाया हुआ गाल है औरत की जिन्दगी।।
जो चाहे जिसके सामने इसको परोस दे।
सुविधा से भरा थाल है औरत की जिन्दगी।।
चूनर की जगह इसको कफन तो न दीजिये।
वैसे ही तंग हाल है औरत की जिन्दगी।।''[16]

अत्यधिक दमन और अत्याचार क्रांति को जन्म देता है। साहित्कार का काम केवल जुल्म–ज्यादती का चित्रण करना ही नहीं होता, अपितु शोषित और प्रताड़ित को जोर–जुल्म से टक्कर लेने के लिए तैयार करना भी होता है। रचनाकार जनसामान्य में आशा और विश्वास का संचार करता है। ग़ज़लकार बल्ली सिंह चीमा भारतीय स्त्री की स्वाधीनता के समर्थक एवं पोषक हैं। वे अपनी ग़ज़लों में क्रान्तिकारी औरतों की क्रियाशीलता को विभिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं। उन्हें पूरी उम्मीद है कि महिलाएँ एक न एक दिन अपने ऊपर होने वाले जुल्म के खिलाफ उठ खड़ी होंगीः–

''ये अभावों से उलझती काम करती औरतें,
अब अँधेरे में मशाल बन जलेंगी औरतें,
जिन्दगी, बच्चे, रसोई, खेत तक सीमित नहीं,
जिन्दगी को और भी विस्तार देंगी औरतें।
गोलबन्दी कर रही हैं, लड़ रही अन्याय से,
ज़िन्दगी को अब नया आकार देंगी औरतें।[17]

तेजपाल सिंह 'तेज' ने अपनी ग़ज़लों में नारी को संघर्षशील होने का संदेश दिया है। वे अपनी रचनाओं में सामाजिक खोखलेपन और पुरुष–स्वार्थपरता के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। बहुत सी महिलाओं का बचपन भी अनेक परेशानियों भरा रहा होता है। भारतीय समाज में विवाह के पश्चात् लड़की के लिए उसका ससुराल ही सबकुछ होता है। वह अपने पति, बच्चों और घर–परिवार की देखभाल में रच–बस जाती है। इन व्यस्तताओं और जिम्मेदारियों के चलते वह अपने पैतृक घर तक को भूल जाती है। यहाँ उल्लेखनीय है कि ऐसी महिलाओं की संख्या बहुत अधिक नहीं है। महिलाओं को अपने ससुराल में अपने पति, बच्चों, सासन्ससुर की देखभाल के साथ ही अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तेजपाल सिंह 'तेज' लिखते हैंः–

''पाँव पड़ी पाजेब तो बिटिया, बचपन का सच भूल गई।
केवल सपनों सी आती है, माँ का आँचल भूल गई।''[18]

यद्यपि महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक कानून बनाए गए हैं, परन्तु इसके बावजूद भी आए दिन महिलाओं के साथ अपराध होते रहते हैं। ऐसे अपराधों और अन्याय–अत्याचार के अनेक कारण हो सकते हैं, परन्तु ग़ज़लकार तेजपाल सिंह 'तेज' इसके लिए लोगों की संवेदनहीनता और अपने आपको समझदार मानने वाले लोगों की चुप्पी को भी जिम्मेदार मानते हैंः–

''किस–किस को बतलाए गोरी,
छोड़ भगा धनिया को होरी।
देख जमाने की रंगत को,
कब तक करती सीनाजोरी।
बेअदबों की साख बनी है,
यार 'अदब' अपनी कमजोरी।
'तेज' अकेला क्या कर लेगा,
भीड़ पड़े है सब पर भारी।''[19]

महिलाओं के कंधों पर अपने घर–परिवार की अनेकानेक जिम्मेदारियाँ होती हैं। कुछ महिलाओं के लिए ससुराल, जिसे उसका अपना घर कहा जाता है, वह चुनौतियों भरा होता है। ऐसे में वे जब कभी भी उदास या मायूस होती हैं, तो उन्हें अपने मायके की याद आती हैः–

''अनपढ़ धनिया की पाजेबें आज भी हँसती–रोती हैं,
मिट्टी वाले घर से अब भी बाकी कुछ तो रिश्ता है।''[20]

रचनाकार अपने आस–पास के घटनाक्रम पर अपनी पैनी निगाह रखता है। तेजपाल सिंह 'तेज' महाभारत के उदाहरण को आज भी घटित होते देखते हैं। आज भी सरेआम ऐसी घटनाएँ हाती हैं और भीड़ तमाशबीन बनी रहती है। लोग इतने संवेदनहीन हो गए है कि कुछ लोग तो पीड़ित की मदद करने के बजाय घटना को वीडियो बनाते रहते हैं। समाज की इस संवेदनहीनता को रेखांकित करते हुए 'तेज' लिखते हैंः–

''लाज धनिया की महफिल में लुटती रही,
लोग बैठे रहे गाफिलों की तरह।
कि गरीबी सड़क पे खड़ी रह गई,
लोग छटते रहे बादलों की तरह।''[21]

## निष्कर्ष

स्त्री–विमर्श ने हिन्दी ग़ज़ल में खूब जगह बनाई है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने नारी को संघर्षशील बनाने का संदेश दिया है। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में सामाजिक खोखलेपन और पुरुष की स्वार्थपरता के विरुद्ध आवाज उठाई है। ग़ज़लकारों ने नारी–मन की प्रत्येक दशा का चित्रण किया गया है। समसामयिक हिन्दी ग़ज़ल में नारी की संवेदनाओं, दर्द, पीड़ाओं को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। इन ग़ज़लों में कन्याभ्रूण–हत्या, बाल विवाह, बेमेल विवाह, शारीरिक शोषण, बलात्कार, मान–मर्दन, दहेज हत्या, तरुण विधवा, देवदासी, वेश्या, गुलाम, परिवार में शोषित की भूमिका, पाँव की जूती के समान समझने की भावना आदि विषयों के वर्णन के साथ–साथ उस पर होने वाले अत्याचार एवं शोषण का यथार्थ चित्रण मिलता है। वर्तमान युग में नारी सशक्तिकरण की भावना के साथ उनको समान अवसर और अधिकार देने के साथ ही सभी प्रकार की भेदभावपूर्ण प्रथाएं समाप्त करने की आवश्यकता है। वह इसी के माध्यम से लैंगिक समानता एवं आर्थिक तरक्की को प्राप्त कर सकती है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने नारी के शोषण और दमन का चित्रण कर समाज को नारी के प्रति संवेदनाल होने का संदेश दिया है।

## सन्दर्भ


1. मुनव्वर राना, माँ, वाणी प्रकाशन, दरियांगज, नई दिल्ली, संस्करण–2002, पृष्ठ संख्या–90
2. डॉ. सरदार मुजावर, हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं.–2010, पृष्ठ संख्या–47
3. अदम गोंडवी, समय से मुठभेड़, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, आवृत्ति संस्करण, 2020, पृष्ठ संख्या–56
4. डॉ. दरवेश भारती,ग़ज़ल के बहाने (पत्रिका) पुष्प – 15, अंक मई 2014, अंशु प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–18
5. डॉ. दरवेश भारती,वही, पुष्प –12, अंक मई–2013, अंशु प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–14
6. वही,वही, अंक–जनवरी 2009, पृष्ठ संख्या–29
7. डॉ. सरदार मुजावर, हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.–2001, पृष्ठ संख्या–147
8. दीक्षित दनकौरी, ग़ज़ल दुष्यन्त के बाद, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.–2009, पृष्ठ संख्या–39
9. बल्ली सिंह 'चीमा', हादसा क्या चीज है, समय साक्ष्य प्रकाशन, फालतू लाइन, देहरादून–248001, द्वितीय संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–13
10. दीक्षित दनकौरी, ग़ज़ल दुष्यन्त के बाद (भाग 3) वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–186
11. गौरी नाथ, हिन्दी की चुनिन्दा ग़ज़लें, अंतिका प्रकाशन, शालीमार गार्डन, गाजियाबाद उत्तरप्रदेश, प्र.सं.–2015, पृष्ठ संख्या–78
12. डॉ. सरदार मुजावर, हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.–2010, पृष्ठ संख्या–41
13. रवीन्द्र कालिया, हिन्दी की बेहतरीन ग़ज़लें, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन लोदी रोड़, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण–2016, पृष्ठ संख्या–41
14. बल्ली सिंह चीमा, हादसा क्या चीज है, समय साक्ष्य प्रकाशन, फालतू लाइन, देहरादून–248001, द्वितीय संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–56
15. वही,पृष्ठ संख्या–64
16. डॉ. रोहिताश अस्थाना, हिन्दी ग़ज़ल : उद्भव और विकास, सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–340।
17. बल्ली सिंह चीमा, हादसा क्या चीज है, समय साक्ष्य प्रकाशन, फालतू लाइन, देहरादून–248001, द्वितीय संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–22
18. तेजपाल सिंह 'तेज', दृष्टिकोण, राहुल प्रकाशन शाहदरा दिल्ली, प्रथम सं. 2012, पृ. सं. 47
19. तेजपाल सिंह 'तेज', हादसों के दौर में, संगीता प्रकाशन शाहदरा दिल्ली, प्रथम सं. 2012, पृ. सं. 47
20. तेजपाल सिंह 'तेज', ट्रेफिक जाम है, शेष साहित्य प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली, प्रथम सं. 2012, पृ. सं. 41
21. वही, पृ. सं. 44